

---

आदर्श प्रश्न- पत्र - 1  
संकलित परीक्षा - I  
विषय - हिंदी 'अ'  
कक्षा - नवमी

---

निर्धारित समय: 3 घण्टे

अधिकतम अंक: 90

निर्देश:

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं -  
खंड क- 20 अंक  
खंड ख- 15 अंक  
खंड ग - 35 अंक  
खंड घ - 20 अंक
  2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- 

खंड-क  
(अपठित गद्यांश)

1. (क) (i) जब मन में सच्ची भक्ति नहीं हो  
(ख) (ii) सच्चे प्रेमयुक्त हृदय में  
(ग) (iii) कबीरपंथी  
(घ) (iv) दोनों धर्मों के अनुयाई अपनी-अपनी रीति से कबीर का अंतिम संस्कार करना चाहते थे ।  
(ङ.) (iii) कबीर
  2. (क) (i) संतानहीनता  
(ख) (iii) संतान के विषय पर  
(ग) (iv) मुनि वशिष्ठ से  
(घ) (ii) पुत्रेष्टि यज्ञ करने का  
(ङ) (ii) राजा दशरथ की चिंता
  3. (क) (i) निरंतर संघर्ष करते हुए  
(ख) (iii) लक्ष्य के पास पहुंच कर भी उसे प्राप्त ना कर पाना  
(ग) (iii) उपमा अलंकार  
(घ) (iv) जीवन की असफलताओं को  
(ङ) (ii) आशावादी बनना
  4. (क) (ii) वर्षा ऋतु का  
(ख) (i) बीज से अंकुर फूट पड़ा  
(ग) (iv) आसमान में पानी भरे बादल है  
(घ) (ii) बादल  
(ङ) (iii) उपमा
-

---

### खण्ड - ख

#### (व्याकरण)

5. (क) अन् ।  
(ख) अ ।  
(ग) सत्  
(घ) स्व ।
6. (क) अव्ययीभाव समास।  
(ख) द्वंद समास।  
(ग) बहुव्रीहि ।  
(घ) द्विगु समास।
7. (क) यदि अनुमति हो तो दिनेश अंग्रेजी पढे ।  
(ख) नीचे ! सेब खाएगी ।  
(ग) गीता बाजार नहीं गई है ।
8. (क) श्लेष  
(ख) अनुप्रास से  
(ग) यमक से  
(घ) रूपक अलंकार का

### खण्ड - ग

#### (पाठ्य-पुस्तक)

9. (क) दोनों बैलों के लिए झूरी के साले गया का घर नया स्थान था । उन्होंने वहाँ नाँद में मुँह इसलिए नहीं डाला क्योंकि वह अपना घर छोड़ने से दुःखी थे तथा नाँद में रुचिकर भोजन नहीं था ।  
(ख) 'दिल भारी होना' मुहावरे का अर्थ है दुखी होना ।  
(ग) गाँव में सोता पड़ने पर बैल पगहा तुड़ाकर घर की तरफ भागे । क्योंकि बैल अपने मालिक झूरी के पास जाना था उन्हें नया घर, नया गांव, तथा नए आदमी बेगाने लगते थे।
10. (क) छोटी बच्ची की माँ नहीं थी और सौतेली माँ उसे अत्यधिक सताती थी, ठीक उसी तरह गया बच्ची के फूफा झूरी के बैलों पर अत्याचार कर रहा था । बच्ची उत्पीड़न का दर्द, प्रेम का महत्व, अपनों से बिछड़ने का गम तथा उपेक्षा के दर्द को भली-भाँति समझती थी। अतः उसने हीरा-मोती के दुःख एवं कष्ट को भी भली-भाँति समझा। उसका निश्चल मन गया द्वारा हीरा-मोती पर किए जा रहे अत्याचार से द्रवित हो उठा और उनके प्रति उसके दिल में अगाध प्रेम उमड़ आया ।  
(ख) उस समय तिब्बत में हथियार कानून नहीं था । अतः सभी लोग पिस्तौल, बंदूक, लाठियों की तरह रखते थे । अतः यात्रियों को खून का डर हमेशा बना रहता था । वहाँ अनेक निर्जन स्थान हैं जहाँ डाकुओं का साम्राज्य है । उन्हें किसी से कोई डर नहीं होता था । सरकार की ओर से ऐसे स्थानों पर पुलिस अवस्था भी नहीं थी । ऐसे में वे यात्रियों की पहले हत्या करते हैं, तत्पश्चात उनका सामान लूटते थे ।  
(ग) उपभोक्तावादी समाज में उत्पादक लोगों को अपने-अपने उत्पाद की तरफ आकर्षित करने के लिए अनेक उपाय अपनाते हैं जिनमें प्रमुख हैं- विभिन्न माध्यमों से उत्पाद का विज्ञापन, उत्पाद की सच्ची-झूठी कई विशेषताओं का प्रलोभन, आकर्षक पैकिंग, कर्णप्रिय स्लोगन तथा भ्रामक छूट योजनाएँ।
-

- (घ) ददियल व्यक्ति के रूप-रंग, हाव-भाव से दोनों बैल यह समझ गए थे कि वह कौन है और उन्हें क्यों टटोल रहा है, इस विषय में उन्हें कोई संदेह नहीं हुआ कि यह अधिक है। अधिक पशुओं को ले जाकर क्या करेगा यह किसी से छिपा नहीं है। अंतः परिणाम सोचकर दोनों के दिल काँप उठे।
- (ङ) लङ्कोर मार्ग में लेखक को एक जगह दो रास्ते में मिले एक बाँटथा दूसरा दाँएँ। लेखक ने बाँटका रास्ता ले लिया। पृष्ठने पर पता चला कि लङ्कोर का रास्ता दाहिनेवाला था। डेढ़ दो मील वापस लौट कर दाहिने वाला रास्ता लेने तथा सुस्त घोड़े ने लेखक को साथियों से पीछे कर दिया।

11.(क) काव्यांश में 'मोको' ईश्वर के लिए प्रयुक्त हुआ है।

- (ख) उपर्युक्त काव्यांश छंद में तुकांत युक्त रचना है। 'तो तेरे', मैं मस्जिद, 'काबे कैलास', कौने क्रिया-कर्म तो तुरतै, स्वाँसों की स्वाँस इत्यादि में अनुप्रास अलंकार की छटा दर्शनीय है। भाषा सधुक्कड़ी है तथा काव्यांश में गेयता का गुण विद्यमान है।
- (ग) मनुष्य ईश्वर प्राप्ति के अनेक उपाय करता है। उसके लिए वह विभिन्न क्रियाएँ करता है पर उसे प्रभु दर्शन नहीं हो पाते। अतः निराकार ब्रह्म स्वयं मनुष्य से कहते हैं कि हे मनुष्य तुम मुझे कहाँ खोज रहे हो मैं तो तुम्हारे पास हूँ। मैं किसी मन्दिर, मस्जिद या तीर्थ स्थान में नहीं रहता। मैं आडंबरपूर्ण भक्ति क्रियाओं के माध्यम से भी नहीं मिल पाता। और जो भक्त मुझे सच्चे मन से कही भी याद करता है उसे मैं पलभर में ही मिल जाता हूँ क्योंकि मैं प्राणी की साँस में मौजूद हूँ।

12.(क) सच्चे प्रेमी की कसौटी बताते हुए कवि ने लिखा है कि सच्चा प्रेमी अर्थात्भक्त वही है जो सच्चे मन से भक्ति करते हुए ईश्वर प्राप्ति का प्रयास करता है। उसे ईश्वर के अतिरिक्त और किसी भी वस्तु में रुचि नहीं रहती। वह संसार के बंधनो लोभ, मोह, माया, जाती-पाँति, छल-कपट से मुक्त होता है। संसार का कोई भी आकर्षण उसे आकर्षित उसे आकर्षित नहीं कर सकता सिवाय ईश्वर के।

- (ख) कवयित्री संसार के सांसारिक बंधनों यथा लोभ, मोह, माया इत्यादि से स्वयं को मुक्त नहीं कर पाई है। वे प्रभु भक्ति के द्वारा संसार रूपी सागर को पर करने का उद्देश्य लेकर आई थीं परन्तु यहाँ के बंधनों ने उन्हें ऐसा जकड़ा कि वे अपना उद्देश्य मार्ग भूल गईं। अतः अब उनके द्वारा मुक्ति के लिए किए गए प्रयास विफल हो रहे हैं।
- (ग) कवि रसखान श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त हैं, अतः वे श्रीकृष्ण से संबंधित प्रत्येक वस्तु से अगाध प्रेम करते हैं। अपने लीलाकाल में श्रीकृष्ण जहाँ कहीं भी गए थे, जिन वास्तु को उन्होंने छुआ था वे सब रसखान को अत्यंत प्रिय हैं। कवि उन चीजों को देखकर साक्षात् कृष्ण का दर्शन उनमें पाते हैं। अतः वे ब्रज जो श्रीकृष्ण की लीला भूमि थी उससे दूर नहीं होना चाहते, उसे निहारते रहना चाहिए।
- (घ) कवि ने कोयल के असमय बोलने की अनेक संभावनाएँ जताई हैं, जिसमें प्रमुख है - कोयल का पागल होना, कोई विशिष्ट संदेश जनमानस तक पहुँचाना, स्वतंत्रता की दवानल की लपटे देखकर इसकी सूचना प्रसारित करना, क्रांतिकारियों के मन में देश प्रेम की भावना का संचार करना।
- (ङ) कविता में वर्णित घटनाओं एवं फसलों के आधार पर कहा जा सकता है कि कविता में शिशिर और बसंत ऋतु का वर्णन है। क्योंकि इसी ऋतु में पेड़ों के पत्ते गिरते हैं तथा वृक्षों में नई कोंपले, शाखाएँ तथा फल-फूल आना शुरू होते हैं। आमों में मंजरियाँ आने का समय भी यही है।

---

13. समाज पर जब दुख का काला साया मँडरा रहा हो और लोग उसे भूलकर अपनी मौजमस्ती में लीन रहे, वही लोग संवेदनशील हैं। ऐसे कुछ ही लोग समाज में होते हैं परंतु इससे संपूर्ण सामाजिक ढाँचा प्रभावित होता है। इससे वे सामाजिक उपेक्षा का पात्र बन जाते हैं। यही नजारा पटना में बाढ़ के दौरान भी देखने को मिला। जब युवक-युवतियों की एक टोली नाव पर सवार होकर पिकनिक के मूड में जलधारा में प्रविष्ट हुई। परन्तु उनके हाव-भाव से अप्रभावित बाढ़ पीड़ितों ने उनकी जबरदस्त खिल्ली उड़ाई। ऐसे कई उदाहरण देखने को मिलते हैं। ऐसे लोगों के चलते समाज में व्याप्त सामाजिक आचार-विचार प्रभावित होता है, दोस्ती दुश्मनी की तरफ बढ़ती है और होते-होते एक दिन ऐसा भी आता है जब समस्त व्यवस्था धाराशायी हो जाती है।

#### खण्ड-घ

#### ('लेखन')

14. **“पश्चिम की ओर बढ़ते कदम”**

भारतीय समाज में आज पाश्चात्य संस्कृति की धूम मची हुई है। लोग अपनी संस्कृति को छोड़कर बाहरी संस्कृति के आकर्षण में बंधे हुए हैं। यह आकर्षण इतना मजबूत है कि इसके मोहपाश से आज की पीढ़ी की निकलाना कठिन हो रहा है। पाश्चात्य की संस्कृति का खुलापन, उसकी चमक-दमक हमें प्रभावित कर रहा है। हमारी संस्कृति इतने खुलेपन की विरोधी है। आज की पीढ़ी खुलापन चाहती है। वह किसी का जीवन में हस्तक्षेप पसंद नहीं करती है। मदिरा, नाच-गाना यही उनके जीवन का उद्देश्य रह गया है। परिवार, ज़िम्मेदारियाँ उनके लिए आज महत्वपूर्ण नहीं हैं। अतः वे अपनी संस्कृति से दूर हो रहे हैं। इसका दुष्प्रभाव भारतीय संस्कृति पर पड़ रहा है और वह धीरे-धीरे विलुप्ति की कगार पर है। हमें चाहिए कि अपनी संस्कृति को बचाएँ। बच्चों को अपनी संस्कृति के महत्व को बताएँ, उनमें बचपन से ही ऐसे मूल्य डालने आरंभ करें, जो कहीं खोते जा रहे हैं। बाहरी संस्कृति के भाव से बचाना है, तो उन्हें अपनी संस्कृति से परिचय करना आवश्यक है। यह हमारी ही संस्कृति है जिसने नदियाँ को माँ का दर्जा दिया है। यहाँ हर धर्म को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। जहाँ क्षमा माँगने वाले को गले से लगाया जाता है तथा हारे हुए अपने शत्रु को भी मान-सम्मान के साथ छोड़ दिया जाता है। हमारी संस्कृति ने प्रेम, अहिंसा, सत्य इत्यादि भावों को महत्व दिया है।

15. प्रति,

स्वास्थ्य अधिकारी,

हैदराबाद ।

विषय - खाद्य पदार्थों में मिलावट।

मान्यवर,

मैं एक सजग नागरिक के रूप में आपका ध्यान नगर में बिकने वाले खाद्य पदार्थों की दयनीय स्थिति की ओर दिलाना चाहता हूँ। आशा है कि आप इस ओर ध्यान देकर स्थिति को सुधारने का प्रयास करेंगे।

नगर में फल व सब्जी विक्रेता गले-सड़े फलों को फेकने की बजाय उन्हें सस्ते दामों पर बेचने का प्रयास करते हैं। निर्धन ग्राहक इन्हें खरीदने का लोभ संवरण नहीं कर पाते और कई प्रकार की बीमारियों का शिकार हो जाते हैं। गर्मियों के मौसम में हैजे जैसी बीमारियाँ फैलने की आशंका रहती है।

नगर के हर कोने में ऐसी रेहड़ियाँ दिखाई देती हैं जिन पर पकोड़े, गोलगप्पे, चाट, घटिया आइसक्रीम और नकली ठंडे पेय पदार्थ बेचे जा रहे हैं। इनको बनाते समय सफाई का ध्यान नहीं रखा जाता। इनमें घटिया

---

---

सामग्री का प्रयोग होता है। जहाँ खड़े होकर ये अपना सामान बेचते हैं, वहाँ कचरा व गंदगी भी फैलाते हैं। कूड़ेदान का प्रयोग भी इन लोगो द्वारा नहीं किया जाता है।

इस दशा में सुधार हेतु आपके विभाग के कर्मचारियों को मुस्तैदी से काम करना चाहिए। मिलावटी और खराब सामान बेचने वालों के विरुद्ध सख्त कार्यवाही करनी चाहिए। आशा है कि आप इस और ध्यान देंगे।

भवदीय,

यश

हरी नगर

हैदराबाद

दिनांक: 25 सितम्बर 2015

16. **“महँगाई और बढ़ती कीमतें”**

हमारे समाज में जहाँ चारों ओर अनेक समस्याएँ हेम दिन-प्रतिदिन झेलनी पड़ती हैं उनमें महँगाई और उसके कारण बढ़ती कीमतों की समस्या सबसे प्रमुख है। बढ़ती कीमतों का प्रभाव समाज के प्रत्येक वर्ग को प्रभावित करता है दिन-बी-दिन बढ़ती महँगाई के कारण रोजमर्रा की वस्तुओं की कीमतें आकाश छूने लगी हैं। 'यह पंक्ति ऐसे समय में पूर्णतया सत्य प्रतीत होती है कि 'पहले मुट्ठी भर ले जाते थे और थैला भर के लाते थे। परन्तु अब थैला भर ले जाते हैं और मुट्ठी भर लाते हैं।' बेचारा मध्यम वर्ग जिसे अपनी सीमित आय में पुरे महीने का खर्च चलाना होता है उसे इन आसमान छूती कीमतों से काफी असुविधाओं का सामना करना पड़ता है। मध्यम वर्ग के पास इस महँगाई से लड़ने का अस्त्र सीमित आय के रूप में है परन्तु निम्न वर्ग, जिसकी न कोई निश्चित आय है और न निश्चित रोजगार। इस वर्ग के लिए इस महँगाई के दौर में दो वक्त का खाना भी जुटा पाना सहज नहीं है। यह वर्ग सबुह से शाम तक करमतोड़ मेहनत करने पर भी अपना पेट नहीं भर पाता। अतः इस बढ़ती महँगाई और इसके फलस्वरूप आसमान छूती कीमतों की रफ्तार को कम करना होगा क्योंकि यह तेजी जनजीवन के हित में नहीं है।